



National School of Drama

(An autonomous Institution of Ministry of Culture, Govt. of India)

Sanskar Rang Toli (TIE Co.)

presents



Ministry of Culture
Government of India

भूत की आत्मकथा

a devised play based on
the novel "Impish Chronicles
& Doggish Dabbler"
written by K. N. Y. Patanjali

Design & Direction

Aruna Kumar Malik

Script, Poster-Brochure & Light Design

Himanshu B Joshi

Music

Ajay Kumar

Sound Design

Santosh Kumar Singh

Choreography

Moon Moon Singh



उपन्यासकार के.एन.वाई. पतंजलि

आंध्र प्रदेश के एक प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार, के.एन.वाई. पतंजलि (जन्म—1952, निधन—2009) ने कई समाचार पत्रों में कार्य किया, जिनमें 'ईनाडु' और 'आंध्र प्रभा' शामिल हैं, और वे 'साक्षी' समाचार पत्र के सम्पादक भी रहे। उन्होंने अपना खुद का समाचार पत्र 'पतंजलि पत्रिका' शुरू किया और कई उपन्यास व लघु कहानियाँ लिखीं। उनकी अधिकांश रचनाओं में उनकी विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली दिखाई देती है। उनके प्रमुख कार्यों में शामिल हैं — 'अमृतोपमानम्', 'खाकी वनम्', 'पेम्पुडु जंतुवुलु', 'राजुगोरु', 'वीर बोबिली', 'गोपत्रुडु', 'पिलाका तिरुगुडु पुव्वु', 'राजू गारी लोगिल्लु', 'पतंजलि भाष्यम्' आदि।

Novelist K N Y Patanjali

A noted writer, journalist from Andhra Pradesh, KNY Patanjali (b.1952, d. 2009) worked in various news papers including Enadu, Andhara Prabha and edited Sakshi news paper. He started his own news paper Patanjali Patrika and wrote many novels and short stories. Most of his writings has his own style of satire. His major works include 'Amrutopamanam', 'Khaki Vanam', 'Pempudu Jantuvulu', 'Rajugoru', 'Veera Bobbili', 'Gopatrudu', 'Pilaka Tirugudu Puvvu', 'Raju Gari Logillu', 'Patanjali Bhashyam' etc.

नाटक के बारे में

यह नाटक 'इंपिश क्रॉनिकल्स एंड डॉगिश डेबलर' नामक उपन्यास की तीन कहानियों पर आधारित है— 'पीक ऑफ पपिलियन्स', 'मिमिक पैरट' और 'डॉगिश डैबलर'। इस नाटक में बाल के.एनवाई पतंजलि उर्फ पंकु, जो एक लेखक बनने की इच्छा रखता है, 'भूत' या अपने अतीत (स्थानीय भाषा में जिसे 'भूत' कहा गया है) से बात करता है। भूत को उस बच्चे में इसलिए दिलचस्पी है क्योंकि वह अपनी आत्मकथा लिख चुका है।

पहली कहानी, 'पीक ऑफ पपिलियन्स' में तितलियों का एक समूह है जो अपनी ही दुनिया में जी रहे हैं और मानते हैं कि वो कैटरपिलर (इल्ली) से पैदा नहीं हुए हैं। लेकिन जब वे सच की तलाश में निकलते हैं, तो कई चुनौतियों का सामना करते हैं। अंततः वे एक सहजन (झमस्टिक) के पेड़ तक पहुँचते हैं, जो उन्हें यह सच्चाई बताता है कि जीवन चक्र की प्रक्रिया में कैटरपिलर ही तितली में बदलती है। दूसरी कहानी, 'द मिमिक पैरट', हमें एक अनोखे तोते पोपटलाल की जीवन-यात्रा पर ले जाती है, जिसे उसके अपने साथी तोते ही स्वीकार नहीं करते। वह वन देवता से प्रार्थना करता है कि उसे किसी भी जानवर की नकल करने की अद्भुत शक्ति मिले। यह शक्ति उसे जंगल में सबसे अलग बनाती है, लेकिन फिर भी उसके साथी उसे नहीं अपनाते। एक अमीर और कुलीन मादा बिल्ली उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करती है। अन्ततः एक भूखा नर बिल्ला उसे धोखा देकर मार देता है। तीसरी कहानी बोबिली नामक एक शिकारी कुत्ते पर केंद्रित है, जो फकीरराजू का पालतू है और मनुष्यों की तरह बोलने की कला जानता है। लेकिन दुर्भाग्यवश वह 'सूरी' को दे दिया जाता है जो उसे बीच राह में छोड़ देता है। बोबिली को जल्द ही यह अहसास हो जाता है कि बिना सोचे-समझे घमंड में जीना सही नहीं है। इस तरह यह नाटक कल्पना, आत्ममंथन व सामाजिक व्यंग्य का अद्भुत समागम है।

About the Play

This devised play is based on three stories from the novel 'Impish Chronicles & Doggish Dabbler' namely 'Peak of Pappillion's', 'Mimic Parrot' and 'Doggish Dabbler'. A young child, KNY Patanjali aka Panku, who aspires to be a writer, interacts with 'Ghost' or 'Bhoot' or 'his past' (as identified in colloquial language). Bhoot is too interested in the kid as he has written his autobiography. Starting with the first one, 'Peak of Pappilion', a group of united butterflies who are trapped in their own world struggle to prove their perception that they cannot evolve from Caterpillar. However, in their venture into the search for truth, they came across some challenges till they reached the drumstick tree, who reveals the truth that caterpillars, through the process of the life cycle, evolve into butterflies. The second story, "The Mimic Parrot" takes us on a journey where Popatlal, a unique daydreamer, is unaccepted by his fellow parrots. He wishes the Van Devta (Nature God) to grant him the wish to possess the talent to mimic any animal he wants. With this unique talent that marks him different from the rest of the jungle even so he is not only boycotted by his fellow mates but also exploited by a female noble rich cat, hitherto. He is duped and killed by a hungry male cat signifying dissatisfaction as a vice. The third story throws light on a dog, Bobbili the hunting Dog, owned by Fakir Raju, who possesses the art of talking like real human beings. Much to his unfortunate luck, he ends up being sold to 'Suri', who finally considers Raju as righteous. Bobbili soon realizes that he is not supposed to blindly rise high in ego.

परिकल्पना व निर्देशन अरुण कुमार मलिक



Design & Direction Aruna Kumar Malik

उड़ीसा में जन्मे और पले-बढ़े श्री अरुण कुमार मलिक ने बी.एफ.ए. उत्कल विश्वविद्यालय से ललित कला (मूर्तिकला) में और 2007 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। तब से आप एक अभिनेता, निर्देशक, दृश्य व मंच सामग्री परिकल्पक के रूप में काम कर रहे हैं। आपने एक परिकल्पक, अभिनेता व निर्देशक के रूप में 250 से अधिक नाटकों में काम किया है, कुछ फिल्मों और टीवी सीरियल्स में भी काम किया है। ब्रिटेन में एडवांस प्रोस्थेटिक मेक-अप का अध्ययन करने के लिए आपको चार्ल्स वॉलेस इंडिया ट्रस्ट फेलोशिप और 2014 में संगीत नाटक अकादेमी ने बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया। आपने देश के अलग-अलग हिस्सों में कई रंग कार्यशालाएँ आयोजित की हैं। मई 2017 से आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं और वर्तमान में परिकल्पना व निर्देशन विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। आप रानावि के त्रिपुरा, सिक्किम, बंगलुरु, वाराणसी व श्रीनगर केन्द्र के इंचार्ज हैं।

Born and brought up in Orissa, Aruna Kumar Malik did B. F. A. in Fine Arts (Sculpture) from Utkal University and Post Graduate Diploma in Acting from the National School of Drama in 2007. Since then, he has been working as an actor, director and set & props designer. He has worked in more than 375 plays as designer, actor and director. He has acted in few films and TV serials also. He has been awarded Charles Wallace India Trust Fellowship to study advance prosthetic make up in UK and with Bismillah Khan Youth Award by Sangeet Natak Akademi in 2014. He has conducted several theatre workshops in many different parts of the country. Joined NSD, Delhi as Assistant Professor (Stage Craft) in May 2017 and is presently the H.O.D of Design & Direction Department. He is also the Centre In-charge of NSD Tripura, Sikkim, Bengaluru, Varanasi and Shrinagar Centres.

निर्देशकीय

यह नाटक हमने पहले रानावि टीआईई विंग, त्रिपुरा के छात्रों के साथ तैयार किया था। प्रसिद्ध लेखक के.एन.वाई. पतंजलि के उपन्यास की कहानियाँ हमारे इस डिवाइड्ड प्रस्तुति की बुनियाद बनीं। हमने तीन कहानियाँ चुनी—‘पीक ऑफ पपिलियन्स’, ‘द मिमिक पैरट’ और ‘द डॉगिश डैबलर’। विचार यह था कि बच्चों के लिए एक ऐसा नाटक बने जिसमें कल्पनाओं की दुनिया हो, रंगों और लय की फंतासी हो। प्रारम्भिक स्तर पर कई इम्प्रोवाइजेशन (तत्काल आशु अभिनय) किए गए, जिन्हें अलग किया गया, तोड़ा गया और फिर-फिर रचा गया। इस प्रक्रिया में छात्रों ने स्वयं ही संगीत की रचना की, संवादों और गतियों को विकसित किया, और जानवरों की मूल प्रवृत्तियों की शारीरिकता को सम्वाद का माध्यम बनाते हुए कहानियों को जीवन दिया। अब इसे संस्कार रंग टोली के कलाकारों के साथ फिर से तैयार किया गया है ताकि यह ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक पहुँच सके।

इस प्रस्तुति के लिए कलाकारों के भीतर चरित्र के प्रति गहरी आस्था, हर चरित्र के लिए स्पष्ट आन्तरिक समझ, उनकी शारीरिक अभिव्यक्तियों और आवेगों की सटीकता बेहद आवश्यक थी। इसके लिए समूह-कार्य, संगीत निर्माण, सामंजस्य, गति और विभिन्न उम्र के बच्चों की मनोविज्ञान की गहराई में उतरना भी उतना ही ज़रूरी था। इस प्रस्तुति में ‘भूत’, ‘माँ’ और ‘बच्चा’ मिलकर सभी बाधाओं को पछाड़ते हुए बच्चों को मिलाने वाले सेतु बन जाते हैं। यह हास्यपूर्ण लेकिन गम्भीर शैली, कलाकारों को इस बात के लिए प्रेरित करती है कि वे कहानी को केवल सम्वादों से नहीं, बल्कि विभिन्न क्रिया-प्रतिक्रियाओं के माध्यम से मंच पर जीवन्त करें, जिससे प्रदर्शन की भाषा और भी अर्थपूर्ण हो सके।

Director's Note

This play was initially developed with the students of the NSD TIE Wing in Tripura. The stories from the novel by renowned writer K.N.Y. Patanjali laid the foundation for this devised performance. We selected three stories — ‘Peak of Pappilions’, ‘The Mimic Parrot’, and ‘The Doggish Dabbler’. The idea was to create a play for children that explored a world of imagination — a fantasy woven with colours and rhythm. At the initial stage, several improvisations were created, dismantled, reconstructed, and restructured again and again. In this process, the students themselves composed music, developed dialogues and movements, and brought the stories to life by using the physicality of basic animal instincts as a mode of communication. Now, the play is being recreated with the artists of Sanskaar Rang Toli so that it can reach more children.

For this performance, it was essential for the actors to have deep faith in their characters, a clear internal understanding of each role, and precision in their physical expressions and impulses. The process required strong group work, musical creation, synchronisation, movement, and a deep dive into the psychology of children from various age groups. In this performance, the characters of the Ghost, Mother, and Child become a bridge that breaks all barriers and connects with the children. This comical yet serious style of storytelling encourages the performers not to rely solely on dialogue but to bring the story alive on stage through various stimuli and responses — making the language of performance all the more meaningful.



नाट्यालेख, प्रकाश व पोस्टर-ब्रोशर परिकल्पना हिमांशु बी जोशी

हिमांशु बी. जोशी एक बहुआयामी लेखक, परिकल्पक व निर्देशक हैं। आपने 'मेमसाहब पृथ्वी', 'हाँ, मैं गीत बँचता हूँ', 'चाउफा-प्लांग्लू', 'कर्ण', 'शो मस्ट गो ऑन', 'इक्कीसवीं सदी की दादी', 'मंगल ग्रह का रहस्य' और 'चरखा' जैसे नाटक लिखे हैं। आपने सलमान रुश्दी के उपन्यास 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन' का नाट्य रूपांतरण और शमा फुतेहल्ली के 'ताजमहल', लॉरेन हेंसबरी के 'अ रेज़िन इन द सन', तथा डगलस कार्टर बेन के 'एज़ बीज़ इन हनी ड्राउन' का अनुवाद किया है। दारियो फो के नाटक 'अ वुमन अलोन' का हिन्दी अनुवाद रंगप्रसंग में प्रकाशित हुआ है। इसके अलावा प्रकाश परिकल्पना के क्षेत्र में हिमांशु एक जाना-माना नाम हैं और पिछले 25 वर्षों से आपने कई महत्वपूर्ण नाटकों की प्रकाश परिकल्पना की है। आपको रंगमंच में कनिष्ठ व वरिष्ठ शोधवृत्तियाँ प्राप्त हुई हैं और रंग प्रशिक्षण, पोस्टर-ब्रोशर और प्रॉस्पेक्टस की परिकल्पना की है और रंगमंच हेतु भारत के विभिन्न स्थानों के अलावा टोक्यो, लंदन, बेलफास्ट, मॉरीशस, दुबई और ताइवान की यात्रा की है। प्रकाश परिकल्पना में विशेष

योगदान के लिए आपको नटसम्राट सम्मान (1999) और तापस सेन सम्मान (2025) से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में आप हिन्दी की प्रतिष्ठित रंगमंच पत्रिका नटरंग के अतिथि सम्पादक हैं।

Script, Poster-Brochure & Lighting Design Himanshu B Joshi

A prolific writer, designer, and director, Himanshu B Joshi has written plays such as 'Memsahab Prithvi', 'Haan, Main Geet Bechta Hoon', 'Chaufa-Planglu', 'Karna', 'The Show Must Go On', 'Ikkisvi Sadi Ki Dadi', 'Mangal Grah Ka Rahasya' and 'Charkha'. He has adapted Salman Rushdie's Midnight's Children for NSD, and translated plays like Shama Futehally's Taj Mahal, Lorraine Hansberry's A Raisin in the Sun, and As Bees in Honey Drown by Douglas Carter Beane (directed by Mariana Weinstein). His translation of Dario Fo's A Woman Alone was published in Rangprasang. Himanshu is a well known name in the lighting design, designed lights for many important plays from the last 25 years. He is a recipient of Junior and Senior research fellowships, taught theatre, designed poster-brochure & prospectus and visited widely across the country and cities like Tokyo, London, Belfast, Mauritius, Dubai, and Taiwan for performances. He has been awarded the Natsamrat Samman (1999) and Tapas Sen Samman (2025) for his contribution to lighting design. Presently, he is the Guest Editor of Natarang, a prestigious theatre journal in Hindi.



संगीत संयोजन अजय कुमार

एक उत्कृष्ट रंगकर्मी अजय कुमार ने अपने अभिनय व गायन दोनों के लिए सम्मान प्राप्त किया है। आपने 1989 में पटना के निर्माण कला मंच से रंगमंच की शुरुआत की और बाद में भोपाल स्थित रंग विदूषक संस्था से जुड़ गये। तत्पश्चात वर्ष 2000 में आपने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से अभिनय में विशेषज्ञता के साथ स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की।

अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के साथ काम करने के अनुभव ने आपको एक बहुमुखी अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार और लेखक के रूप में विकसित किया। आपने अब तक 50 से अधिक नाटकों, कविताओं, कहानियों और जीवनियों में अभिनय किया है। आपके कुछ प्रमुख कार्यों में टिम सप्ल निर्देशित शेक्सपियर का नाटक 'अ मिडसमर नाइट्स ड्रीम' शामिल है, जिसे विश्वभर में प्रस्तुत किया गया।

आप 50 से अधिक नाटकों से संगीत निर्देशक के रूप में भी जुड़े रहे हैं और अब तक कई नाटक निर्देशित कर चुके हैं। वर्तमान में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में आवाज़ व सम्भाषण तथा रंग-संगीत के सह-प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

Music & Sound Design Ajay Kumar

An artist par excellence, Ajay Kumar has earned respect for his acting as well as singing skills. He started theatre in 1989 with Nirman Kala Manch, Patna, and later joined Rang Vidushak, Bhopal. Later in 2000, he did Post Graduation from the National School of Drama, New Delhi with a specialization in acting. His experience of working with several eminent personalities helped him grow as a versatile actor, director, composer, and writer. He has acted in more than 50 plays, poems, stories, and biographies. Some of his most important works include Shakespeare's A Midsummer Night's Dream, directed by Tim Supple which traveled all over the world. Associated with more than 50 plays as a music director, he is currently working as an Associate Professor of Voice and Speech and Theatre Music at the National School of Drama.

नृत्य संयोजन
मून मून सिंह

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक मून मून सिंह एक अभिनेत्री, नृत्यांगना व रंगमंच निर्देशक हैं। वर्तमान में आप ऊर्जा परफॉर्मिंग आर्ट्स सेंटर, नयी दिल्ली एवं नोएडा नामक अपनी कला संस्था का संचालन कर रही हैं। आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय व लिपा, इंग्लैंड सहित कई कला संस्थानों में अभिनय, नृत्य, निर्देशन और मूवमेंट की अतिथि प्राध्यापक हैं। आपने भारतीय शास्त्रीय नृत्य, जैज, समकालीन नृत्य और बैले का अध्ययन किया है। अपने करियर के दौरान आपने भारत सहित जापान, इंग्लैंड और जर्मनी के कई प्रतिष्ठित कलाकारों व निर्देशकों के साथ कार्य किया है। इसके अलावा आप फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों से भी जुड़ी रही हैं। अभिनय के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए आपको संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रसिद्ध बिस्मिल्ला खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।



Choreography
Moon Moon Singh

A graduate of the National School of Drama, New Delhi, Moon Moon Singh is an Actress, Dancer, and Theater Director. Currently managing her Art organization, Oorjaa Performing Arts Center in New Delhi and Noida, She is a guest faculty for Acting, Dance, Direction, and Movement in various Art Institutions including the National School of Drama, LIPA (England). She studied Indian Classical Dance, Jazz, Contemporary Dance, and also Ballet. During her career, she worked with many eminent Artists and Directors from across the country and Japan, England, and Germany. She has also been involved in films and TV series. She has been awarded the prestigious Bismillah Khan Award by Sangeet Natak Academy for her contribution to Acting.

ध्वनि परिकल्पना
संतोष कुमार सिंह

संतोष कुमार सिंह (सैंडी) दिल्ली-निवासी एक प्रसिद्ध ध्वनि परिकल्पक हैं, जो फिल्मों, टेलीविज़न, रंगमंच और समकालीन नृत्य प्रस्तुतियों के लिए ध्वनि परिकल्पना में सिद्धहस्त हैं। बिना किसी ब्रेक के लगातार संतुलित ध्वनि परिकल्पना करने की आपकी नवाचारी दृष्टि को विशेष रूप से सराहा गया है। अब तक आप 800 से अधिक मंच प्रस्तुतियों, 30 फिल्मों, 45 वेब सीरीज़ और अन्य कई परियोजनाओं के लिए ध्वनि परिकल्पना कर चुके हैं।



Music & Sound Design
Santosh Kumar Singh

Santosh Kumar Singh (Sandy) is a Delhi based well known sound design artist with expertise in designing sound for films, television, theatre and contemporary dance productions. His innovative approach towards bringing a symmetrical sound design without any break has been well appreciated. So far he has designed sound for more than 800 stage productions, 30 films, 45 web series and many more.

सहायक निर्देशक
श्वेता श्रीवास्तव

श्वेता श्रीवास्तव ने यद्यपि आईटी इंजीनियरिंग में स्नातक किया, लेकिन रंगमंच में गहरी रुचि होने के कारण उन्होंने रंगमंच में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। वे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, सिक्किम केंद्र की 2014 बैच की पूर्व छात्रा हैं। तब से वे निरंतर इस क्षेत्र में सक्रिय हैं और एक रंगमंच शिक्षक, प्रशिक्षक, अभिनेत्री, पटकथालेखक और निर्देशक के रूप में कार्य कर रही हैं।



Assistant Director
Shweta Srivastava

Shweta Srivastava Graduated in IT engineering but keen interest in theatre lead to obtain Masters in theatre. Alumni of NSD Sikkim 2014 batch. Since then continuously working in this field as theatre teacher, trainer, actor, scriptwriter and director.

मंत्र पर

जयंत राभा
मोहित जैन
स्वप्ना छेत्री
डॉ. एस. बूमिनाथन
स्निग्धा पॉल
राजेश्वरी नंदी
मीनाक्षी
मो. शहंशाह
अमित के. कुशवाहा
रोनिका
साधना
जुमली डमले
बानी सैकिया
अनंत राज गौतम

मोकेल, सूरी
पोपटलाल, बच्चा
सफेद बिल्ली, तितली, बच्चा, तोता, बच्चा
सियार, तोता, चोर, गाड़ीवाला, पपेट
तितली, पपेट, बच्चा
बच्चा, तितली, पेड़, फूल, वन देवता, फ़कीर राजू
बच्चा, तितली, तोता
बच्चा, तितली, मुखिया तोता, कुत्ता
भूत, जगन्नाथ, कठपुतली
बच्चा, गिरगिट, पेड़, फूल, नकारात्मक बिल्ला, पपेट
बच्चा, तितली, तोता, पेड़, फूल, अरासवल्ली
बच्चा, के.एन.वाई पतंजलि, नौकर बिल्ला, पपेट
मम्मी, तोता, लेडीबग, पपेट
पपेट

मंत्र परे

उपन्यास
इम्प्रोवाइज़ेशन
नाट्यालेख
संगीत संरचना
ध्वनि परिकल्पना
नृत्य—निर्देशन
पोस्टर—ब्रोशर व प्रकाश परिकल्पना
मंच सामग्री व वेशभूषा परिकल्पना
ध्वनि संचालन व क्रियान्वयन
ध्वनि अंकन
प्रकाश सहायक व क्रियान्वयन
मंच प्रबंधक
सहायक निर्देशक
परिकल्पना व निर्देशन

के. एन. वाई. पतंजलि
टी.आई.ई. विंग त्रिपुरा के छात्र (2023–24 बैच)
हिमांशु बी. जोशी
अजय कुमार
संतोष कुमार सिंह 'सैंडी'
मून मून सिंह
हिमांशु बी. जोशी
अरुण कुमार मलिक
नितिन कुमार
सतीश के
धीरेन्द्र कुमार
डॉ. एस. बूमिनाथन
श्वेता श्रीवास्तव
अरुण कुमार मलिक

आभार

श्री चितरंजन त्रिपाठी, निदेशक, रानावि
श्री प्रदीप कुमार मोहंती, कुलसचिव, रानावि
श्री बिप्लब बोरकाकोटी, केन्द्र निदेशक, रानावि टी.आई.ई. विंग, त्रिपुरा

On Stage

Jayanta Rabha

Mohit Jain

Swapna Chetry

Dr. S. Boominathan

Snigdha Paul

Rajeshwari Nandi

Meenakshi Nautiyal

Md. Shahenshah

Amit K. Kushwaha

Ronika

Sadhana

Jumli Ngomle

Bani Saikia

Anant Raj Gautam

Mokel, Suri

Popatlal, Bachcha

White Cat, Butterfly Bachcha, Parrot, Bachcha

Siyar, Parrot, Chor, Gadiwala, Puppet

Butterfly, Puppet, Bachcha

Bachcha, Butterfly, Tree, Flower, Van Devta, Fakeer Raju

Bachcha, Butterfly, Parrot

Bachcha, Butterfly, Mukhiya Parrot, Dog

Bhoot, Jagannath, Puppet

Bachcha, Girgit, Tree, Flower, Negative Cat, Puppet

Bachcha, Butterfly, Parrot, Tree, Flower, Araswalli

Bachcha, K.N.Y Patanjali, Servant Cat, Puppet

Mummy, Parrot, Ladybug, Puppet

Puppet

Off Stage

Novel

Improvisations

Script

Music Composition

Sound Design

Choreography

Poster-Brochure &

Lighting Design

Props & Costume Design

Sound Execution & Operation

Sound Recording

Lighting Assistant & Execution

Stage Manager

Asst. Director

Design & Direction

K.N.Y. Patanjali

T.I.E. Wing Tripura Students (2023-24 Batch)

Himanshu B Joshi

Ajay Kumar

Santosh Kumar Singh 'Sandy'

Moon Moon Singh

Himanshu B Joshi

Aruna Kumar Malik

Nitin Kumar

Satish K

Dhirendra Kumar

Dr. S. Boominathan

Shweta Shrivastava

Aruna Kumar Malik

Acknowledgements

Shri Chittaranjan Tripathy, Director, NSD

Shri P.K Mohanty, Registrar, NSD and All Staff Members

Shri Biplob Borkakoti, Centre Director, NSD TIE Wing, Tripura

BKAK TEAM

TIE Artists



Mohit Jain



Swapna Chetry



Dr. S. Boominathan



Snigdha Paul



Rajeshwari Nandi



Meenakshi Nautiyal



Md. Shahanshah

Guest Artists



Bani Saikia



Ronika



Amit Kumar



Sadhana



Jumli Ngomle



Anant Raj Gautam

TIE TEAM



Riken Ngomle
Chief, NSD TIE Co.



Jayanta Rabha
Coordinator, NSD TIE Co.



Darmiyan Singh
Administration, TIE



Shailendra Kumar
Administration, TIE



Joginder Singh
Lighting Dept. TIE



Ram Avatar Meena
Carpentry Dept. TIE



Brijesh Sharma
Carpentry Dept. TIE



Dhirendra Kumar
Lighting Dept. TIE



Nitin Kumar
Sound Dept. TIE



Reena Kala
Costume Dept. TIE



Sunil Kumar
Attendant



Md. Rashid
Attendant

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय संस्कार रंग टोली

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की थिएटर-इन-एजुकेशन कम्पनी (संस्कार रंग टोली) की स्थापना 16 अक्टूबर 1989 को हुई थी और यह देश के प्रमुख शैक्षणिक संसाधन केन्द्रों में से एक है। इसका उद्देश्य 8 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों को रंगमंच के माध्यम से शिक्षित करना है। संस्कार रंग टोली की प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं—

बच्चों के लिए प्रदर्शन : टाई कम्पनी में अभिनेता-शिक्षकों का एक समूह होता है जो बच्चों के साथ काम करता है और उनके लिए प्रदर्शन करता है। इस कम्पनी का मुख्य फोकस स्कूलों में रचनात्मक, पाठ्यक्रम आधारित और सहभागितापूर्ण नाटकों का प्रदर्शन करना है, जिन्हें विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता है।

ग्रीष्मकालीन रंगमंच कार्यशाला : हर वर्ष मई-जून में एक महीने की गहन "ग्रीष्मकालीन थिएटर कार्यशाला" आयोजित की जाती है। इस कार्यशाला का उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए बच्चों को सामाजिक रूप से एकीकृत करना और उन्हें नाट्य गतिविधियों के ज़रिए स्वयं व अपने परिवेश के प्रति सम्वेदनशील बनाना है।

शिक्षकों के लिए कार्यशाला : टाई कम्पनी शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करती है ताकि वे अपने विद्यार्थियों के साथ रंगमंच को 'अर्थपूर्ण' रूप से लागू कर सकें। इसमें शिक्षकों को प्रभावशाली और आनन्ददायक शिक्षण विधियों की तकनीकें सिखाई जाती हैं और बच्चों के समग्र विकास में नाटक की भूमिका पर एक साझा समझ विकसित की जाती है।

कार्यशाला व महोत्सव यात्रा : कॉलेजों, अभिभावकों, सामाजिक संगठनों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करना भी टाई कम्पनी की प्रमुख गतिविधियों में शामिल है। कम्पनी विभिन्न राज्यों के विभागों, संस्थानों और संगठनों के साथ मिलकर देश और विदेश में अपने नाटकों के महोत्सव आयोजित करती है।

जश्न-ए-बचपन : टाई कम्पनी ने 1998 में बच्चों के लिए पहला राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव "जश्न-ए-बचपन" आयोजित किया था, जो अब एक नियमित द्विवार्षिक आयोजन बन चुका है। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से बच्चों द्वारा और बच्चों के लिए प्रस्तुत किए गए नाटकों को आमंत्रित किया जाता है।

बाल संगम : नई सहस्राब्दी की शुरुआत के साथ, टाई कम्पनी ने "बाल संगम" नामक एक द्विवार्षिक आयोजन शुरू किया था। यह भारत की पारम्परिक और लोक प्रदर्शन कलाओं का उत्सव है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के बच्चे अपनी पारम्परिक कलाओं का प्रदर्शन करते हैं।

संडे क्लब : टाई कम्पनी "संडे क्लब" नामक एक विशेष रंगमंच कार्यशाला का आयोजन करती है, जो विशेष रूप से रविवार को होती है। **संडे क्लब भाग-1 :** इसमें बच्चे मौलिक प्रस्तुतियाँ तैयार करते हैं, जो एक प्रक्रिया आधारित अभ्यास के ज़रिए विकसित होती हैं। **संडे क्लब भाग-2 :** यह बच्चों की नाटक को कला के रूप में समझने की दिशा में भाग-1 से आगे का एक कदम है। **संडे क्लब भाग-3 :** इस भाग में बच्चों को नाटक के मूल तत्वों को समझने और उन्हें व्यवहार में लाने का अवसर मिलता है।

पूर्वोत्तर यात्रा : टाई कम्पनी हर साल पूर्वोत्तर क्षेत्रों का दौरा करती है और वहाँ बच्चों और शिक्षकों के साथ नाटकों और कार्यशालाओं का आयोजन करती है।

PHOTO

A photograph of the National School of Drama building. The building is white with a prominent central archway and is flanked by columns. Above the entrance, there is a red banner with the text 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' in Hindi and 'NATIONAL SCHOOL OF DRAMA' in English. The building is surrounded by greenery and a clear blue sky.

National School of Drama Theatre-in-Education Co.

The Theatre-in-Education Company (Samskar Rang Toli) of the National School of Drama was established on 16, October 1989, and is one of the important educational resource centres of the country. It aims to educate children (8–16 years) through the medium of theatre. TIE Co. carries out following activities :-

Performance for Children: The TIE Co. consists of a group of actor– teachers working with and performing for children. The major focus of the company is to perform creative, curriculum based and participatory plays in Schools, designed and prepared specially for children of different age groups.

Summer Theatre Workshop: A one month long intensive “Summer Theatre Workshop for Children” is organized in May-June every year. The workshop aims at the social integration of children from various backgrounds to sensitize them towards themselves and their surroundings through theatre activities in a play-way method.

Teachers Workshop: TIE Co. offers workshops for teachers to establish and apply theatre “meaningfully” with their pupils. It also offers skills, techniques for effective and enjoyable teaching-learning activities in classroom situation and to build a common understanding about the role of drama in overall development of child.

Workshop and Festival Tour : Workshops for colleges, parents, social organizations and children with special needs are also TIE Co.'s important activities. TIE Co. also organizes theatre festivals of its plays by undertaking extensive tours in collaboration with various departments, organizations, institutions and groups of various states of the country and abroad.

Jashne-Bachpan : TIE Co. organized its first ever National Theatre Festival for Children, titled “Jashne-Bachpan” from 1998 onwards which is now a regular biennial feature of the TIE Company that invites plays by and for children from different parts of the country.

Bal Sangam : With the start of new millennium TIE Co. started a new biennial event “Bal Sangam”, a festival of Indian performing folk and traditional arts presented by children practicing these arts from different regions of the country.

Sunday Club : TIE Co. organizes Sunday Club—a specialized production oriented theatre workshop held exclusively on Sundays. **Sunday Club Part-I :** In this part children work to devise original performances through a process of improvisations. **Sunday Club Part- II :** A Step further towards developing children's understanding of theatre as an art. **Sunday Club Part- III :** A space for understanding basic theatre elements and bringing them into practice.

North East Tour : TIE Co. tours North East regions to organise TIE plays and workshops with children and teachers every year.



Theatre-in-Education Company
National School of Drama
Bahawalpur House, Bhagwandas Road,
New Delhi-110001
Enquiry : nsdtie@gmail.com
www.nsd.gov.in

design : Himanshu B Joshi #9810549956